Journal of Social Review and Development, 2024; Special 1:71-73 ISSN NO: 2583-2816

Special Issue

"(Global Partnership: India's Collaboration Initiatives for Economic and Social Growth)"

सतत् विकास लक्ष्यों में भारत की भूमिका

डॉ0 सुनीति लता

असिस्टेंट प्रोफेसर, बी. एड. विभाग, गोकुलदास हिंदू गर्ल्स कॉलेज, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence Author: डॉ0 सुनीति लता

सारांश

सतत विकास से हमारा अभिप्राय ऐसे विकास से है, जो हमारी भावी पीढ़ियों की अपनी ज़रूरतें पूरी करने की योग्यता को प्रभावित किये बिना वर्तमान समय की आवश्यकताएँ पूरी करे। सतत विकास लक्ष्यों का उद्देश्य सबके लिये समान, न्यायसंगत, सुरक्षित, शांतिपूर्ण, समृद्ध और रहने योग्य विश्व का निर्माण करना और विकास के तीनों पहलुओं, अर्थात सामाजिक समावेश, आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण को व्यापक रूप से समाविष्ट करना है। सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्य के बाद (जो 2000 से 2015 तक के लिये निर्धारित किये गए थे) विकसित इन नए लक्ष्यों का उद्देश्य विकास के अधूरे कार्य को पूरा करना और ऐसे विश्व की संकल्पना को मूर्त रूप देना है, जिसमें चुनौतियाँ कम और आशाएँ अधिक हों। सभी के लिये स्वच्छता और पानी के सतत् प्रबंधन की उपलब्धता सुनिश्चित करना। सस्ती, विश्वसनीय, टिकाऊ और आधुनिक ऊर्जा तक पहुँच सुनिश्चित करना। सभी के लिये निरंतर समावेशी और सतत् आर्थिक विकास, पूर्ण और उत्पादक रोज़गार तथा बेहतर कार्य को बढ़ावा देना। लचीले बुनियादी ढाँचे, समावेशी और सतत् औद्योगीकरण को बढ़ावा।

मूलशब्द: समाज की आवश्यकता, समाज विकास के लक्ष्य, समाज में निहित कार्यों की समीक्षा आदि।

परिचय

सतत विकास एक दूरदर्शी योजना है जो आर्थिक विकास को माँ सामाजिक न्याय संगतता और पर्यावरण संरक्षण के समावेशन से विकास का आह्वान करती है तथा विकास के लिए जो भविष्य की पीढ़ियों आवश्यकताओं को ध्यान में रख दें, वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करने पर ज़ोर देती है।

सतत विकास लक्ष्यों को वैश्विक लक्ष्यों के रूप में भी जाना जाता है। बिल का उद्देश्य वर्ष 2030 तक दुनिया भर में गरीबी को समाप्त कर सभी नागरिको को एक सामान सुरक्षित और उत्कृष्ट जीवन देता है। सतत विकास, आर्थिक विकास, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक कल्याण के बीच संतुलन खोजने का प्रयास करता है। 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा के शिखर सम्मेलन में 193 सदस्य देशों ने इसे अपनाया और बताया कि वैश्विक स्तर पर सतत विकास प्राप्त करने के लिए लक्ष्य कैसे एकीकृत और अभिभाजन है संयुक्त राष्ट्र ने 17 विश्व विकास लक्ष्य बनाएं, जिन्हें सतत विकास लक्ष्य एसडीजी कहा जाता है। इनका संक्षिप्त विवरण निम्न है।

1. निर्धनता नहीं
गरीबी के सभी रूपों की पूरे विश्व में समाप्ति।

2. शून्य भूख
भूख की समाप्ति, खाद्य सुरक्षा और बेहतर पोषण और बिकाऊ कृषि को बढ़ावा।

3. अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली
सभी आयु के लोगों में स्वास्थ्य, सुरक्षा और सवस्थ जीवन को बढ़ावा।

4. गुणवत्ता की शिक्षा
समावेशी और न्यायसंगत गुणवत्तायुक्त शिक्षा सुनिश्चित करने के साथ ही लोगों को सीखने का अवसर देना।

5. लैंगिक समानता
लैंगिक समानता प्राप्त करने के साथ ही महिलाओं और लड़कियों को सशक्त करना।

6. स्वच्छ जल एवं स्वच्छता
सभी के लिए स्वच्छता और पानी के सतत प्रबंधन की उपलब्धता सुनिश्चित करना।

7. सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा
सस्ती, विश्वसनीय, टिकाऊ और आधुनिक ऊर्जा सब तक पहुंचाना सुनिश्चित करना।

8. अच्छा काम और आर्थिक विकास
सभी के लिए निरंतर समावेशी और सतत आर्थिक विकास, पूर्ण और उत्पादक रोजगार तथा बेहतर काम को बढ़ावा देना।

9. उद्योग नवाचार और बुनियादी ढांचा
लचीले बुनियादी ढांचे, समावेशी और सतत औद्योगीकरण को बढ़ावा।

10. असमानताओं में कमी
देशों के बीच और भीतर असमानता को कम करना।

11. टिकाऊ शहर और समुदाय
सुरक्षित, लचीले और टिकाऊ शहर को और मानव बस्तियों का

निर्माण।

12. जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन
स्थायी खपत और उत्पादन पैटर्न को सुनिश्चित करना।

13. जलवायु कार्रवाई
जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभावों से निपटने के लिए तत्काल कर कार्रवाई करना।

14. पानी के नीचे जीवन
स्थायी सतत विकास के लिये महासागरों, समुद्रों और समुद्री संसाधनों का संरक्षण और उपयोग।

15. जमीन पर जीवन
सतत उपयोग को बढ़ावा देने वाले परिस्थितिकीय प्रणालीयो, सुरक्षित जंगलों, भूमि शरण और जैव विविधता के बढ़ते नुकसान को रोकने का प्रयास करना।

16. शांति न्याय और मजबूत संस्थाएँ
सतत विकास के लिए शांतिपूर्ण और समावेशी समितियों को बढ़ावा देने के साथ ही साथ सभी स्तरों पर इन्हें प्रभावित, जवाबदेह पूर्ण बनाना ताकि सभी के लिये न्याय सुनिश्चित हो सके।

17. लक्ष्यों के लिए साझेदारी
सतत विकास के लिए वैश्विक भागीदारी को पुनर्जीवित करने के अतिरिक्त कार्य का आयोजन वयन के साधनों को मजबूत बनाना ।

भारत में सतत विकास लक्ष्य
सतत विकास लक्ष्यों को लागू करने में भारत का रिकॉर्ड -

- कुशल श्रमिकों को रोजगार उपलब्ध कराने और उनके जीवन स्तर में सुधार के लिए महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम लागू किया जा रहा है ।
- सब्सिडी युक्त खाद्यान्न उपलब्ध कराने के लिए राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम लागू किया जा रहा है ।
- लक्ष्य अपने प्रमुख कार्यक्रम स्वच्छ भारत अभियान के तहत भारत को खुले में शौच से मुक्त बनाना है।
- सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और ऊर्जा दक्षता के ऐसे अन्य नवीकरणीय स्रोतों का दोहन करने और जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को कम करने के लिए 2022 तक नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन लक्ष्य 175 गीगाबाइट निर्धारित किया गया है।
- बुनियादी ढांचे के पहलुओं में सुधार के लिए अटल कायाकल्प और शहरी परिवर्तन मिशन (अमृत) और हेरिटेज सिटी डेवलपमेंट ऐंड ऑग्मेंटेशन योजना (हृदय) आ योजनाएं शुरू की गई है।
- भारत ने पेरिस समझौते को मंजूरी देकर जलवायु परिवर्तन से निपटने की अपनी मंशा ज़ाहिर कर दी है।

संकेतकों की समीक्षा
2020 में संयुक्त राष्ट्र सांख्यिकी आयोग के 51वें सत्र में संकेतक ढांचे की व्यापक समीक्षा की गई। 2025 में इसकी फिर से समीक्षा की जाएगी , सांख्यिकी आयोग के 51वें सत्र में (3–6 मार्च 2020 तक न्यूयॉर्क शहर में आयोजित)) आयोग के विचार के लिए वैश्विक संकेतक ढांचे में कुल 36 बदलाव प्रस्तावित किए गए थे। कुछ संकेतकों को प्रतिस्थापित, संशोधित या हटा दिया गया। 15 अक्टूबर 2018 और 17 अप्रैल 2020 के बीच, संकेतकों में अन्य बदलाव किए गए। फिर भी उनका मापन कठिनाइयों से भरा हुआ है।

सतत विकास लक्ष्य के उद्देश्य–
1. कोई गरीबी नहीं
एसडीजी 1 का उद्देश्य है: "हर जगह गरीबी को उसके सभी रूपों में समाप्त करना।" एसडीजी 1 को प्राप्त करने से 2030 तक विश्व स्तर पर अत्यधिक गरीबी समाप्त हो जाएगी। इसका एक संकेतक गरीबी रेखा से नीचे रहने वाली आबादी का अनुपात है । डेटा का विश्लेषण लिंग, आयु, रोजगार की स्थिति और भौगोलिक स्थिति (शहरी/ग्रामीण) के आधार पर किया जाता है।

2. शून्य भूख (कोई भूख नहीं)
एसडीजी 2 का उद्देश्य है: "भूखमरी समाप्त करना, खाद्य सुरक्षा और बेहतर पोषण प्राप्त करना और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देना।" इस लक्ष्य के संकेतक उदाहरण के लिए अल्पपोषण की व्यापकता, गंभीर खाद्य असुरक्षा की व्यापकता और पांच साल से कम उम्र के बच्चों में बौनेपन की व्यापकता हैं।

3. अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली संपादन करना
एसडीजी 3 का उद्देश्य है: "स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करना और सभी उम्र के लोगों के कल्याण को बढ़ावा देना।" यहां महत्वपूर्ण संकेतक जीवन प्रत्याशा के साथ–साथ बाल और मातृ मृत्यु दर भी हैं। अन्य संकेतक उदाहरण के लिए सड़क यातायात की चोटों से होने वाली मौतें, वर्तमान तंबाकू के उपयोग की व्यापकता और आत्महत्या मृत्यु दर हैं।

4. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा संपादन करना
एसडीजी 4 का उद्देश्य है: "समावेशी और समान गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करना और सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना।"

5. लैंगिक समानता संपादन करना
एसडीजी 5 का उद्देश्य है: "लैंगिक समानता हासिल करना और सभी महिलाओं और लड़कियों को सशक्त बनाना।" संकेतकों में, उदाहरण के लिए, उपयुक्त कानूनी ढांचे का होना और राष्ट्रीय संसद या स्थानीय विचार–विमर्श निकायों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व शामिल है। जबरन विवाह और महिला जननांग विकृति/काटने (एफजीएम/सी) के आंकड़े भी एक अन्य संकेतक में शामिल हैं।

6. स्वच्छ जल और स्वच्छता संपादन करना
एसडीजी 6 का उद्देश्य है: "सभी के लिए पानी और स्वच्छता की उपलब्धता और स्थायी प्रबंधन सुनिश्चित करना।" और यूनिसेफ का संयुक्त निगरानी कार्यक्रम (जेएमपी) इस लक्ष्य के पहले दो लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रगति की निगरानी के लिए जिम्मेदार है। इस लक्ष्य के लिए महत्वपूर्ण संकेतक जनसंख्या का वह प्रतिशत है जो सुरक्षित रूप से प्रबंधित पेयजल का उपयोग करता है, और सुरक्षित रूप से प्रबंधित स्वच्छता तक पहुंच रखता है। जेएमपी ने 2017 में बताया कि 4.5 अरब लोगों के पास सुरक्षित रूप से स्वच्छता का प्रबंधन नहीं है । एक अन्य संकेतक घरेलू और औद्योगिक अपशिष्ट जल के अनुपात को देखता है जिसे सुरक्षित रूप से उपचारित किया जाता है।

7. सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा संपादन करना
एसडीजी 7 का उद्देश्य "सभी के लिए सस्ती, विश्वसनीय, टिकाऊ और आधुनिक ऊर्जा तक पहुंच सुनिश्चित करना है।" इस लक्ष्य के लिए संकेतकों में से एक बिजली तक पहुंच वाली आबादी का प्रतिशत है (बिजली तक पहुंच बढ़ाने में प्रगति कई देशों में हुई है, विशेष रूप से भारत, बांग्लादेश और केन्या में)। अन्य संकेतक नवीकरणीय ऊर्जा हिस्सेदारी और ऊर्जा दक्षता को देखते हैं।

8. अच्छा काम और आर्थिक विकास
एसडीजी 8 का उद्देश्य है: "निरंतर, समावेशी और टिकाऊ आर्थिक विकास, पूर्ण और उत्पादक रोजगार और सभी के लिए सभ्य काम को बढ़ावा देना।" वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद की दर शामिल है।

इसके अतिरिक्त उदाहरण युवा बेरोजगारी और व्यावसायिक चोटों की दर या पुरुषों की तुलना में श्रम बल में लगी महिलाओं की संख्या हैं।

9. उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढाँचा संपादन करना

एसडीजी 9 का उद्देश्य है: "लचीले बुनियादी ढांचे का निर्माण करना, समावेशी और टिकाऊ औद्योगीकरण को बढ़ावा देना और नवाचार को बढ़ावा देना।" इस लक्ष्य के संकेतकों में उदाहरण के लिए, उन लोगों का अनुपात शामिल है जो विनिर्माण गतिविधियों में कार्यरत हैं, मोबाइल नेटवर्क द्वारा कवर किए गए क्षेत्रों में रह रहे हैं , या जिनके पास इंटरनेट तक पहुंच है। जलवायु परिवर्तन से जुड़ा एक संकेतक "वर्धित मूल्य की प्रति इकाई CO_2 उत्सर्जन" है।

10. असमानता कम करके संपादन करना

एसडीजी 10 का उद्देश्य है: "देशों के भीतर और उनके बीच आय असमानता को कम करना।" इस एसडीजी के लिए महत्वपूर्ण संकेतक हैं: आय असमानताएं, लिंग और विकलांगता के पहलू, साथ ही लोगों के प्रवास और गतिशीलता के लिए नीतियां।

11. टिकाऊ शहर और समुदाय संपादन करना

एसडीजी 11 का उद्देश्य है: "शहरों और मानव बस्तियों को समावेशी, सुरक्षित, लचीला और टिकाऊ बनाना।" इस लक्ष्य के लिए महत्वपूर्ण संकेतक शहरी मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों की संख्या, सार्वजनिक परिवहन तक सुविधाजनक पहुंच वाली शहरी आबादी का अनुपात और प्रति व्यक्ति निर्मित क्षेत्र की सीमा हैं।

12. जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन संपादन करना

एसडीजी 12 का उद्देश्य है: "स्थायी उपभोग और उत्पादन पैटर्न सुनिश्चित करना।" संकेतकों में से एक स्थायी उपभोग और उत्पादन पैटर्न को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय नीति उपकरणों की संख्या है। दूसरा वैश्विक जीवाश्म ईंधन सब्सिडी है। घरेलू पुनर्चक्रण में वृद्धि और वैश्विक प्लास्टिक अपशिष्ट व्यापार पर कम निर्भरता अन्य कार्य हैं जो लक्ष्य को पूरा करने में मदद कर सकते हैं।

13. जलवायु कार्रवाई संपादन करना

एसडीजी 13 का उद्देश्य है: "उत्सर्जन को विनियमित करने और नवीकरणीय ऊर्जा में विकास को बढ़ावा देकर जलवायु परिवर्तन और इसके प्रभावों से निपटने के लिए तत्काल कार्रवाई करना।" 2021 से 2023 की शुरुआत में, जलवायु परिवर्तन पर अंतर सरकारी पैनल (आईपीसीसी) ने अपनी छठी मूल्यांकन रिपोर्ट प्रकाशित की, जो जलवायु परिवर्तन से संबंधित वैज्ञानिक, तकनीकी और सामाजिक–आर्थिक जानकारी का आकलन करती है।

14. पानी के नीचे जीवन संपादन करना

एसडीजी 14 का उद्देश्य है: "स्थायी विकास के लिए महासागरों, समुद्रों और समुद्री संसाधनों का संरक्षण और सतत उपयोग।" महासागरों, समुद्री पर्यावरण और छोटे पैमाने के मछुआरों की सुरक्षा के मौजूदा प्रयास संसाधनों की सुरक्षा की आवश्यकता को पूरा नहीं कर रहे हैं। समुद्र के तापमान में वृद्धि और ऑक्सीजन की हानि समुद्र के अम्लीकरण के साथ–साथ समुद्री पर्यावरण पर जलवायु परिवर्तन के दबाव की घातक तिकड़ी का गठन करती है।

15. भूमि पर जीवन संपादन करना

एसडीजी 15 का उद्देश्य है: "स्थलीय पारिस्थितिकी प्रणालियों की रक्षा करना, पुनर्स्थापित करना और स्थायी उपयोग को बढ़ावा देना, जंगलों का स्थायी प्रबंधन करना, मरुस्थलीकरण से निपटना, और भूमि क्षरण को रोकना और उलटना और जैव विविधता के नुकसान को रोकना।" शेष वन क्षेत्र का अनुपात, मरुस्थलीकरण और प्रजातियों के विलुप्त होने का जोखिम इस लक्ष्य के उदाहरण संकेतक हैं।

16. शांति, न्याय और मजबूत संस्थाएँ संपादन करना

एसडीजी 16 का उद्देश्य है: "स्थायी विकास के लिए शांतिपूर्ण और समावेशी समाजों को बढ़ावा देना, सभी के लिए न्याय तक पहुंच प्रदान करना और सभी स्तरों पर प्रभावी, जवाबदेह और समावेशी संस्थानों का निर्माण करना।" जन्म पंजीकरण की दर और रिश्वतखोरी की व्यापकता इस लक्ष्य में शामिल संकेतकों के दो उदाहरण हैं।

17. लक्ष्यों के लिए साझेदारी संपादन करना

एसडीजी 17 का उद्देश्य है: "कार्यान्वयन के साधनों को मजबूत करना और सतत विकास के लिए वैश्विक साझेदारी को पुनर्जीवित करना।" बढ़ते अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को पिछले 16 लक्ष्यों में से प्रत्येक को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। ज्ञान के आदान–प्रदान, विशेषज्ञता, प्रौद्योगिकी और वित्तीय संसाधनों की सुविधा के लिए बहु–हितधारक साझेदारी विकसित करना एसडीजी की समग्र सफलता के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। लक्ष्य में उत्तर–दक्षिण और दक्षिण–दक्षिण सहयोग में सुधार शामिल है। सार्वजनिक–निजी भागीदारी जिसमें नागरिक समाज शामिल हैं, का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है।

निष्कर्ष

सतत विकास लक्ष्यों का मुख्य उद्देश्य विश्व में गरीबी को पूर्णतः समाप्त करना है तथा सभी समाजों में सामाजिक न्याय व पूर्ण समानता स्थापित करना है। गंभीरता से इन लक्ष्यों का प्राप्ति हेतु कम करना पड़ेगा।

एजेंडा 2030 में सब लक्ष्यों को प्राप्त करना है तो इस तरह की नीती बनानी पड़ेगी जो सभी क्षेत्रों में क्रियान्वित नीतियों से सामांजस्य स्थापित करती है। साथ ही प्रशासनिक एवं छोटे स्तर पर इन नीतियों के क्रियान्वयन हेतु सामंजस्य तथा भागीदारी पर ध्यान देना होगा।

यदि हम सतत विकास लक्ष्यों को वर्ष 2015 तक प्राप्त नहीं कर सके तो इसका मुख्य कारण यह है कि सब नीतियों का क्रियान्वयन सही प्रकार से नहीं था।

यदि हम सतत विकास लक्ष्यों 2030 तक प्राप्त कर लेते हैं तो ही सही अर्थों में भारत एक विकसित तथा समृद्ध राष्ट्र बन सकता है।

संदर्भ

1. सतत विकास रिपोर्ट, 2020।
2. सतत विकास पर विशेष अंक यूपीए आई एफपीए, 1993 जुलाई–सितंबर।
3. राष्ट्रीय संयुक्त "जनसंख्या वृद्धि, पर्यावरणीय गिरावट और जलवायु परिवर्तन", 2022 अक्तूबर 28।
4. "प्रमुख समझौते और सम्मेलन – सतत विकास ज्ञान मंच" संयुक्त राष्ट्र, 2022 दिसंबर 30।
5. पुनरावास – सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) पर तथ्य पत्रक– स्वास्थ्य लक्ष्य, 2019 अक्तूबर 14।
6. फॉरेस्टयर, ओना, किम, राख्युन ई. सितंबर। सतत विकास लक्ष्यों को चुना राष्ट्रीय सरकारों द्वारा लक्ष्यों को प्राथमिकता देना वैश्विक शासन के लिए निहितार्थ, 2022।